**डॉ. विजय मिश्र**

हार्वर्ड विश्वविद्यालय के प्रतिष्ठित भौतिक विज्ञानी एवं संस्कृत विद्वान। कवि के तौर पर न्यू इंग्लैंड, दक्षिण एशिया के अनेक देशों में चर्चित एवं सफल यात्राएँ कीं। अनेक गरिमापूर्ण कवि सम्मेलनों में भागीदारी। विगत १८ बरसों से हार्वर्ड विश्वविद्यालय में सालाना भारतीय कविता पाठ का आयोजन कर रहे हैं।

सम्पर्क : १८०, बेडफोर्ड रोड, लिंकन, एमए. ईमेल : misra.bijoy@gmail.com

*विमर्श*

## रामायण : आधुनिक विमर्श-६

# देवी सुमित्रा

संसार में सभी माएँ अपने बच्चों की खातिर करती हैं और अपने बच्चों की बल-बुद्धि से प्रसन्न होती है, उनकी उपलब्धियों पर दिल से गर्व करती हैं। लेकिन ऐसी माँ मिलना कठिन है जो सोचे कि उसका लड़का कभी नहीं हारेगा, उसकी सर्वदा विजय होगी। वाल्मीकि की सुमित्रा ऐसी ही एक माँ हैं। वह हैं राजा दशरथ की द्वितीय पत्नी, माता कौशल्या की सखी, सच्चरित्र रामजी की प्रशंसक और अपने पुत्र पर अनन्य भरोसा करने वाली। भारतीय शास्त्रों में ऐसी माताओं को देवी कहा गया है। सुमित्राजी मनुष्य रूप में एक ऐसी ही देवी हैं।

अयोध्या राज्य में वंशरक्षा के लिये राजा दशरथ को एक सन्तान चाहिये। कौशल्याजी को लड़की हुई, लड़का नहीं हुआ। राजा ने दूसरी शादी की, सुमित्रा जी रानी बनकर आई। सुमित्रा जी के अपने परिवार के ऊपर कवि वाल्मीकि नीरव हैं। कहानी में ज़रूरत नहीं, लेकिन यह ज़रूर है कि सुमित्राजी रघुवंश की बुनियाद का ख्याल रखती हैं। उनका धर्म पति का ही धर्म है। सन्तान के सन्धान में जब राजा दशरथ तीसरी शादी करते हैं तो वह नूतन रानी कैकेयी का स्वागत करती हैं, उसके साथ मिलकर रहती हैं।

> *राजा दशरथ की द्वितीय पत्नी, माता कौशल्या की सखी, सच्चरित्र रामजी की प्रशंसक और अपने पुत्र पर अनन्य भरोसा करने वाली, भारतीय शास्त्रों में ऐसी माताओं को देवी कहा गया है। सुमित्राजी मनुष्य रूप में एक ऐसी ही देवी हैं।*

पुत्रार्थ यज्ञ करने के बाद राजा दशरथ पायस का आधा कौशल्याजी को देते हैं, उसका आधा सुमित्राजी को देते हैं, फिर उसके आधा तीसरी कैकेयी को देते हैं। बाकी जो बचता है, उसे फिर वह सुमित्राजी को दे देते हैं। कौशल्याजी से राम आते हैं, सुमित्राजी दो बच्चे होते हैं - लक्ष्मण और शत्रुघ्न और कैकेयी राजा भरत को जन्म देती हैं।

कैकेयी बड़े घराने की कन्या थी। उनके परिवार से कुछ ऐसी बात हुई थी कि उनको अगर पुत्र जन्म लेगा तो वह अयोध्या का राजा बनेगा। ऐसा पुत्र हुआ नहीं, लेकिन अपने बच्चे को राजा बनाने का लालच उसमें भरपूर रहा आया। यज्ञ के प्रसाद से जब कौशल्याजी को पुत्र हुआ तो उनके मन में उसको राजा बनाने की इच्छा जागृत हो गई। काफी पूजा और व्रत मनाकर उन्होंने राजा की प्रतिष्ठा के लिये याचना की।

*मन्दाकिनी नदी के किनारे कौशल्याजी सुमित्रा को प्रबोधना देती है - 'देखो सुमित्रा, तुम्हारा पुत्र कितना शारीरिक श्रम कर रहा है, इसमें उसकी कुछ तैयारी नहीं थी, यह अच्छा होगा कि राम के वापस जाने पर लक्ष्मण को ऐसे भृत्य जैसे श्रम से छुटकारा मिलेगा।' सुमित्राजी कुछ नहीं बोलतीं।*

सुमित्रा जी ने ऐसा कुछ नहीं किया, वह रामजी के प्रशंसक बन गयी। खुद ही कौशल्या जी की सखी बन गयी।

रामजी के ऊपर सुमित्राजी का प्यार अनिर्वचनीय हुआ। अपने लड़के को उन्होंने रामजी का संगी बनाया। ऋषि विश्वामित्र रामजी को जंगल ले जाने के लिये आते हैं और लक्ष्मण उनके साथ देते हैं तो सुमित्राजी को कोई आपत्ति नहीं। वह जानती है रामजी के साथ रहने से लक्ष्मण का कल्याण होगा, उसे चरित्र मिलेगा और विद्या भी मिलेगी। राजा दशरथ यह नहीं पूछते कि वह लक्ष्मण को क्यों छोड़ दे। लक्ष्मणजी रामजी से अभिन्न हो गये हैं, तो ये सुमित्रा माँ की करामात मानी जायेगी।

सुमित्राजी धार्मिक हैं और धर्म को स्वीकार करती हैं। उनको यह प्रत्यक्ष है कि परिवार में अग्रज का स्थान कुछ अलग होता है। जो अग्रज है वह पितातुल्य है। पिता की सारी इच्छाएँ अग्रज में रहती हैं, ज्येष्ठ भ्राता की खातिर करो, यही वह लक्ष्मण को सिखाती है। वन को जाते समय उनको परामर्श देती हैं - 'रामजी को अपने पिता के समान सम्मान करना, उनकी बातें सुनना, उनकी सेवा करना।' लक्ष्मणजी सुमित्राजी का परामर्श अपने हृदय में बिठाकर रामजी की सेवा में लगे रहते हैं।

कौशल्याजी दशरथ की पहली पत्नी हैं तो उनका ख्याल रखना सुमित्राजी अपना कर्तव्य समझती हैं, उन्हीं के साथ खाना, बैठना, उठना और सोना। कौशल्याजी का आवास ही सुमित्राजी का आवास है। तब जब दूसरा लड़का शत्रुघ्न कैकेयी के पुत्र भरत से मिलता जुलता है, सुमित्राजी उसमें बाधा नहीं डालती। भरत को शत्रुघ्न वैसे ही मानता है जैसे लक्ष्मण राम को मानते हैं। बच्चों का आनंद ही माँ का आनंद है। कैकेयी के घमण्ड और अपयश से उन्हें कुछ इतराज नहीं, वह खुद ही कैकेयी से मिलती हैं, कौशल्या जैसे डरती नहीं।

वनवास का आदेश लेकर जब रामजी माता कौशल्या के पास आ पहुँचते हैं तब सुमित्राजी उनके साथ थी, राम का संदेश सुनकर कौशल्याजी घबरा जाती हैं, गुस्सा होती हैं, सुमित्राजी में न घबराहट, न गुस्सा। लक्ष्मण जी को क्रोध होता है। वह राजा दशरथ के साथ युद्ध करने को रामजी को प्रोत्साहन करते हैं, सुमित्राजी नीरव रहती हैं। रामजी के ऊपर उसको भरोसा है, वह जो उचित होगा वही करेंगे, रामजी के विचार के ऊपर उनका पूरा विश्वास है।

जब रथ में बैठकर राम, लक्ष्मण और सीता सुमन्त्र के साथ वन को चलते हैं तो राजा दशरथ का क्षोभ समाया नहीं जाता। अपने निवास से बाहर आकर वह ताकते हैं। कौशल्याजी भी अपने राम को देखने को बाहर चली आती है। कैकेयी राजा दशरथ को अपने हाथ लाने के लिये बाहर चल पड़ती है। लेकिन सुमित्राजी को न शोक है, न शंका। उनका पूरा विश्वास है, कुछ ही अच्छा होने वाला है, अपने बच्चों के ऊपर उनकी अटूट आस्था है।

रामचन्द्रजी का रथ ओझल हो जाने पर राजा दशरथ बेहोश हो जाते हैं, फिर देखते हैं कि कैकेयी उन्हें उठा रही है, उसे वह धिक्कारते हैं। कौशल्याजी के साथ उसके भवन में प्रवेश करते हैं। कौशल्याजी अपने शोक को रोक नहीं सकती, रो पड़ती है। 'राम को और देख न पाऊँ' चिल्लाती है। इस समय सुमित्राजी का दरियादिलीपन संसार की सभी माताओं को श्राव्य है। सुमित्रा जी बोलती हैं - 'बहन, तुम्हारा लड़का गुणी है, धीर है, वीर है, उसको कुछ नहीं होगा। यह भी समझकर रखो कि उसका भाग्य है जो मेरा लक्ष्मण उसका साथ दे रहा है। मेरा बेटा निष्पाप है और सबके साथ चलने वाला है, किसी फिक्र की बात नहीं।' किसी माता का अपने पुत्र के लिये इतना गर्व और हिम्मत देना बड़ी बात है और उनके देवत्व की निशानी है। यही कारण है कि हम सुमित्राजी को देवी सुमित्रा कहते हैं।

भरत जब अपने नाना के घर से लौटते हैं तो पिताजी नहीं हैं, राम भैया भी नहीं हैं। भरतजी जिद करते हैं, रामजी ही राजा बनेंगे, उनका ही राजा बनने का अधिकार है। सभी माताओं के साथ वह रामजी को वापस लाने को चल पड़ते हैं। सारा परिवार चित्रकूट पहुँचता है। मन्दाकिनी नदी के किनारे कौशल्याजी सुमित्राजी को प्रबोधना देती है - 'देखो सुमित्रा, तुम्हारा पुत्र कितना शारीरिक श्रम कर रहा है, इसमें उसकी कुछ तैयारी नहीं थी, यह अच्छा होगा कि राम के वापस जाने पर लक्ष्मण को ऐसे भृत्य जैसे श्रम से छुटकारा मिलेगा।' सुमित्राजी कुछ नहीं बोलतीं। उनको पता था कि रामजी लौटने वाले नहीं थे। जीत के बिना लक्ष्मण घर नहीं लौटते। उनके ऊपर देवी सुमित्रा का अभय वर है। ■